ISSN 2454-5554
An International Peer Reviewed & Referred SJIF 2017 : 4.93
INTERNATIONAL JOURNAL
OF EDUCATIONAL RESEARCH STUDIES
IJERS

हांसी और नारनोल में सूफी स्थलों का अध्ययन : मध्यकालीन वास्तुकला के सदर्भ में

अनीता कुमारी

Abstract

प्राचीन काल में विभिन्न आक्रमणकारियों के आक्रमण के बावजूद भी सामाजिक राजनितिक आर्थिक, धर्मिक के साथ– साथ वास्तुकला की दृश्टि से हरियाणा का इतिहास का बहुत ही गौरवपुर्ण रहा है। इस क्षेत्र में वास्तुकला सिंधुं घाटी और वैदिक काल से लेकर मुगल काल और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन तक विभिन्न सभ्यताओं द्वारा बनाई गई समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शती है। हरियाणा में मंदिरों, किलों, महलों, और आधुनिक इमारतों सहित वास्तुकला की श्रृखला को प्रदर्शित होती है। हरियाणा में मध्ययुगीन स्थापत्य कला इस्लामिक परम्पराओं से काफी प्रभावित थी। सूफियो के अध्यात्मवाद से प्रभावित होकर सल्तनकाल के साथ–साथ मुगल काल में भी विभिन्न भाासकों के द्वारा सूफी, मजारो, मकबरो, मदरसो के साथ– साथ मस्जिदों का भी निर्माण किया। जिसके पिछे दो कारण थे, पहला सूफियों के प्रति आस्था और स्नेह दिखाना दूसरा इस्लाम धर्म के प्रचार व प्रसार को वास्तुकला के रुप प्रदर्शित करना। वास्तुकला की दृश्टि से ये स्मारक तुगलक, लोधी, और मुगल भौलियों का मिश्रण हैं। जो क्षेत्र के साथ–साथ सांस्कृतिक प्रभाव को भी दिखाती है।

कुंजी शब्दः *मेहराबीय शैली, हिन्दू वास्तुकला, इस्लामी वास्तुकला, लिण्टल, वास्तुकला, आरम्भिक इंडों–मुस्लिम,*

प्रस्तावना

12वीं सदी के अन्त में हिन्दुस्तान पर विजय के परिणामस्वरूप तुर्कों ने अपने आप को एक ऐसी भूमि पर पाया जहाँ धार्मिक वास्तुकला की एक उच्च विकसित परम्परा रही थी परन्तु उनकी शैली तुर्कों की शैली से नितान्त भिन्न थी। तुर्क अपने साथ वास्तुकला सम्बन्धी अपनी विशिष्ट शैली लेकर आये जिसे 'मेहराबीय शैली' कहा जाता है जबकि यहाँ की परम्परावादी वास्तुकला 'शहतीरीय शैली' पर आधारित थी।[1] विजेताओं ने यहाँ तीन तरह से भवन–निर्माण का कार्य किया; प्रथम, पुराने भवनों का केवल ऊपरी हिस्सा तोड़कर पुराने आधार पर ही नया ढांचा बनाना। दूसरे, पुराने ढांचे को तोड़कर उसकी सामग्री से ही नया भवन बनाना। तीसरे, बिल्कुल नई सामग्री से भवन बनाना।[2] पारम्परिक हिन्दुस्तानी भवनों में किसी मजबूत जोड़ने वाली सामग्री का प्रयोग नहीं किया जाता था अपितु पत्थरों को एक–दूसरे में इस तरह स्थापित किया जाता था कि वे स्थिर खड़े रहें। तुर्कों के आगमन से हमें चुने, आदि जोड़ने वाली सामग्री का प्रयोग मिलता है। जहाँ 'हिन्दू वास्तुकला' के प्रेरक तत्व मुख्यतः मन्दिरों से प्रकट होते हैं वहीं 'इस्लामी

1 पर्सी ब्राउन, *इण्डियन आर्किटैक्चर; इस्लामिक पीरियड,* बॉम्बे, 1964, पृष्ठ 2
2 वही, पृष्ठ 4

वास्तुकला' को दो भागों में बांटा जा सकता है– धार्मिक, जिसमें मस्जिद, मकबरे आते थे और सांसारिक, जिसमें आम प्रयोग के भवन आते थे। प्रस्तुत अध्याय में मैने मध्यकालीन हरियाणा मे मौजूद सूफी स्थलों का उनसे संबंधित सूफियों के कालक्रम के अनुसार वास्तुकला और पुरातत्वीय परिपेक्ष्य में अध्ययन करने का प्रयास किया है। सूफीयों से सम्बंधित भवन आज अपने मूल रुप मे मौजुद नहीं हैं तथा उनसे सम्बंधित ऐतिहासिक जानकारी का भी अभाव है। अतः यह अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

वास्तुकला "भवनों के निर्माण की योजना और विज्ञान की कला है।"[3] यह "रूप और शैली के इतिहास से अधिक है: यह सांस्कृतिक और पर्यावरणीय कारकों का एक उत्पाद है और लोगों के जीवन के तरीके की अभिव्यक्ति है जिनके लिए इसे बनाया गया है।"[4] वास्तुकला के अध्ययन में भवन निर्माण के विभिन्न पहलू शामिल होते हैं। यह "विज्ञान और कला दोनों है।"[5] यह "मानव गतिविधियों की एक अद्भुत घटना है। अपनी सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति में यह प्रौद्योगिकी और सौंदर्यशास्त्र, कलात्मक रूपों में कार्यात्मक कार्यों की प्राप्ति और निर्माण में उच्चतम स्तर का मिश्रण है। बड़े पैमाने पर निर्माण में, वास्तुकला रोजमर्रा की जिंदगी की आवश्यकताओं को पूरा करती है; लेकिन वास्तुकला की उत्कृष्ट कृतियाँ किसी अन्य प्रकार की कला की तरह युग की भावना को भी व्यक्त करती हैं। जांच में, यह लोगों की प्रेरणा, उनके कलात्मक आदर्श को दर्शाता है।"[6] यह इतिहास का एक आधारभूत स्रोत है और साथ ही अपने आप में एक ललित कला और अध्ययन विषय है जो पत्थर में एक वास्तविक कालक्रम का गठन करता है।[7]

भवन निर्माण गतिविधियों में कई तकनीकें शामिल होती हैं जो जरूरी नहीं कि बनाने वाले के स्थान मे नवाचार हुई हों, अपितु ये आसपास के अन्य क्षेत्रों की प्रौद्योगिकियों से प्रेरित होती हैं। कुछ प्रकार के निर्माण की प्रकृति और विशेषताएं दूसरों से भिन्न हो सकती हैं, जैसे कि मंदिर, मस्जिद और कब्र। लेकिन हम निर्माण सामग्री के आधार पर इमारतों को अलग नहीं कर सकते हैं। इसलिए, व्यापक अर्थों में भवन निर्माण गतिविधियाँ समकालीन समाज के एक धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण को दर्शाती हैं जिसमें

---

[3] जॉन ब्रिटन, *ए डिक्शनरी ऑफ द ऑर्किटेक्चर एंड ऑर्कियालोजी ऑफ द मिडिल एजीज*, लंदन, 1838, पृष्ठ 56

[4] जार्ज मीशेल, *ऑर्किटेक्चर ऑफ द इस्लामिक वर्ल्ड: इट्स हिस्ट्री एंड शोशियल मीनिंग*, लंदन, 1978, पृष्ठ 7

[5] डी. एन. शुक्ला, *वास्तु–शास्त्र, खंड–1, हिंदु साइंस ऑफ ऑर्किटेक्चर*, नई दिल्ली, 1993, पृष्ठ 39

[6] जी. ऐ. पुगाचेंकोवा, 'ऑन सम साइंस एण्ड टेक्निकल फाउंडेशंस ऑफ द ऑर्किटेक्चर ऑफ द सेंट्रल ऐशियन रिजन', बी.वी. सुबायरप्पा (सं.), *साइंटिफिक एंण्ड टेक्नोलॉजिकल एक्सचेंजिज बिट्वीन इंडिया एण्ड सोवियत सेंट्रल एशिया (मिडीवल पिरियड)*, नई दिल्ली, 1985, पृष्ठ 255

[7] आर. नाथ, 'ए सर्वे ऑफ द स्ट्डी ऑफ इण्डो–मुस्लिम ऑर्किटेक्चर', *पुरातत्व*, नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ 40

कई श्रमिकों, मजदूरों, वास्तुकारों, इंजीनियरों ने निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाई। "किसी भी स्मारकीय भवन के निर्माण के अलावा, यह पुरुषों के आंतरिक से बाहरी समझ को विक्षेपित करता है, जिसमें धार्मिक और अन्य बाधाएं टूट जाती हैं, सभी मतभेद शिल्प कौशल के एकीकृत प्रयास में विलय हो जाते हैं, जिससे कि एक मानवता बन जाए।"[8]

हजरत सैयद शाह नियामतुल्लाह, हांसी

हजरत सैयद शाह नियामतुल्लाह, जिन्हें 'मीर साहब' भी कहा जाता है, हरियाणा में चिश्ती सिलसिले से सम्बन्धित प्रमुख सूफियों में से एक थे। उन्होंने हांसी में सर्वप्रथम चिश्ती परम्परा की शुरुआत की थी। उनके हरियाणा में आने को लेकर विरोधाभास है। एच. बी. डब्ल्यू. गैरिक की रिपोर्ट के अनुसार, शाह नियामतुल्लाह, शिहाबुद्दीन गौरी के साथ हांसी के किले को जीतने के लिए आए थे। आक्रमण के दौरान वे मारे गए और परन्तु बाद में स्थानीय लोगों में शहीद के रूप में प्रसिद्ध हो गए।[9] क्योंकि जब आस पास के लोग अपनी मन्नत पूरी हाने के लिए मजार पर जाते है और उनकी मन्नत पूरी हो जाती है

दूसरे मत के अनुसार, जो हांसी से प्राप्त एक शिलालेख पर आधारित है, शाह नियामतुल्लाह 588 हिजरी या 1188 ई. में मुहम्मद गौरी के साथ आए थे।[10] एक अन्य मत के अनुसार हजरत सैयद शाह नियामतुल्लाह ने थानेसर की लड़ाई में भी भाग लिया था और पृथ्वीराज चौहान के भाई खानदेय राव को भी मारा था।[11] जिससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि वे इस्लाम धर्म का प्रसार करने आए थे। उनके पीर और उनके परिवार के विषय में ज्यादा जानकारी का अभाव है। वर्तमान समय में हजरत सैयद शाह नियामतुल्लाह चिश्ती की मजार हांसी में स्थित है। वास्तुकला की दृश्टि से यह हरियाणा की चि ती सूफियो की पहली मजार है। वास्तुकला की दृश्टि से हजरत सैयद शाह नियामतुल्लाह की दरगाह[12]

[8] पर्सी ब्राउन, *इण्डियन आर्किटैक्चर: इस्लामिक पीरियड,* बॉम्बे, 1964, पृष्ठ 1

[9]एच. बी. डब्ल्यू. गैरिक, *रिपोर्ट ऑफ ए टूर इन द् पंजाब एण्ड राजपूताना* इन 1883–84, जिल्द 23, नई दिल्ली, 2012 (पुनर्मुद्रित, प्रथम संस्करण, कलकत्ता, 1887), पृष्ठ 13;देखें, *हरियाणा एन्साइक्लोपीडिया: संस्कृति खण्ड, भाग एक,* दिल्ली, 2010, पृष्ठ 220

[10] जे. होरोविट्ज, 'इन्सक्रिप्शन ऑफ मुहम्मद इब्न साम, कुतुबुद्दीन ऐबक एण्ड इल्तुतमिश', *ऐपिग्राफिका इंडो–मुस्लिमिका (1907–12),* नई दिल्ली, 1987, पृष्ठ 19

[11]एच. ए. रोज, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 535

[12] देखें चित्र 1क

चित्र 1क

हांसी के पुराने किले में स्थित है। यह हांसी के किले की उत्तरी दीवार से सटी हुई है। यहाँ हजरत सैयद शाह नियामतुल्लाह की एक सामान्य कब्र है जो मेहराबीय आलय से सुसज्जित दीवार से घिरी हुई है। इस अहाते की उत्तरी दीवार के मध्य में बना मेहराबदार आलय सबसे बडा व आर्कषक था। ये दीवारें पत्थर व ईटों के मिश्रण से बनी हुई थीं जिसमें पलस्तर भी किया हुआ था। यहां यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि निर्माण में न केवल पहले से मौजूद मन्दिर के पत्थरों का प्रयोग किया गया है अपितु आरम्भिक इंडों–मुस्लिम (मध्यकालीन) भवनों के अव ोषों को भी जगह–जगह पर लगाया गया है। आज हजरत सैयद शाह नियामतुल्लाह की दरगााह का मूल रुप (आधार) ही बचा है। उस पर बना भवन बाद का है। यह स्पष्ट है कि बेशक परिसर का निर्माण लोदी काल या उसके बाद हुआ परन्तु इसमें आरम्भिक मध्यकालीन भवनों के भी अवशेष मौजूद है। उदाहरणार्थ, पश्चिमी दीवार के मेहराब पर मौजूद पत्थर के दो खण्डों पर मुहम्मद गौरी का नाम अंकित है जो 1192–1193 ई. के हैं जब उसने हांसी को विजित किया था। इसी तरह अरबी में एक अन्य लेख इस स्थल के अहाते के प्रवेश द्वार पर स्थित लिण्टल पर अंकित है। इसका वर्ष उपर वर्णित लेख से 5 वर्ष बाद का है अर्थात 1197–98 ईसवी का है।[13] इस अभिलेख में मस्जिद के निर्माण का श्रेय अली बी. इसफन्जार को दिया गया है तथा जिसका हिंदी अनुवाद निम्नलिखित हैः

"इस मस्जिद को बनाने का आदेश अल्लाह के सेवक, अली, इस्फंदीयार के पुत्र द्वारा 10 ज़िल्हज्ज़ा, 593 को दिया गया"।[14]

पहले नम्बर का लेख पत्थर के आयताकार स्लेब पर है जो 41'6'' का है तथा दूसरा 3'6''

[13] मेहरदाद शोकूहि और नतालि एच. शोकूहि, *हिसार–ए–फिरोजा; सल्तनत एंड अर्ली मुगल आर्किटेक्चर इन द डिस्ट्रिक्ट ऑफ हिसार,* इण्डिया, लंदन, 1988, पृष्ठ 90

[14] सुभाष परिहार, *मुस्लिम इंस्क्रिपशन्स इन द पंजाब, हरियाणा एंड हिमाचल प्रदेश,* नई दिल्ली, 1985, पृष्ठ 20

का है। ईंटों व बालू पत्थर का साधारण शैली में बना 'खानकाह' का प्रवेश द्वार भी अभी बचा हुआ है।[15]

शेख नियामतुल्लाह की दरगााह में अरबी में निम्नलिखित दो अलग–अलग लेख होने का जिक्र मिलता है जिनका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है:

"रज़ब, 696 हिज़री के महीने की 25वीं"।[16]

के नाम पर...वह जिसने एक मस्जिद बनाई है...।"[17]आज *शेख* नियामतुल्लाह की दरगाह का मूल रूप आधार ही बचा है उस पर बना भव बाद का जो चित्र ग को दिखया गया हैं।

चित्र 1ख

[15] देखें चित्र 1ख
[16] सुभाष परिहार, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 22
[17] वही, पृष्ठ 20

चित्र 1ग

2. शाह विलायत या पीर तुर्कमान की खानकाह एवं मकबरा, नारनौल *शेख* मुहम्मद तुर्क, नारनौल

शेख मुहम्मद तुर्क जिन्हें, *शेख* पीर तुर्कमान, *शेख* मुहम्मद तुर्क व शाह विलायत के नाम से भी जाना जाता है, नारनौल[18] के 13वीं शताब्दी के एक महत्वपूर्ण आरम्भिक सूफी थे[19] जिन्होनें यहां सर्वप्रथम चिश्ती सिलसिले की नींव रखी। आरम्भिक सूफ़ी साहित्य में *शेख* के विषय ऐतिहासिक जानकारी का अभाव है, परन्तु 'मिफताह–उत–तवारीख' एवं 'अखबार–उल–अखयार' में उनके विषय में जानकारी मिलती है। *शेख* तुर्कमान, तुर्कीस्तान से भारत आये थे।[20] पीर तुर्कमान, ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के साथ भारत आए थे और आकर नारनौल में बस गए। पीर तुर्कमान नारनौली और ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती दोनों *शेख* हजरत ख्वाजा हारुनी के मुरीद थे।[21]

---

[18] नारनौल, दिल्ली से लगभग 84 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अकबर के शासनकाल में यह एक सरकार थी। देखें, ब्लॉकमैन, 'नॉटस ऑन नारनौल', *प्रोसीडिंग्स ऑफ द् एशियाटिक सोसाईटी ऑफ बंगाल (जनवरी–दिसम्बर 1874),* कलकत्ता, 1875, पृष्ठ 226; जी. यजदानी, 'नारनौल एण्ड इट्स बिल्डिंग्स', जरनल एण्ड *प्रोसीडिंग्स ऑफ द् एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल,* न्यू सिरिज, जिल्द ।।।, कलकता, 1908, पृष्ठ 580

[19] आई. एच. सिद्दीकी, 'द् अर्ली चिश्ती दरगााह', क्रिश्च्यिन डब्ल्यू ट्रोल, *मुस्लिम श्रिाईन्स इन इंडिया,* दिल्ली, 1989, पृष्ठ 1

[20] टी. डब्लयू. बील, मिफताह–उत–तवारीख, जैसा कि उद्धृत किया गया है–*प्रोसीडिंग्स् ऑफ द् एशियाटिक सोसाईटी ऑफ बंगाल (जनवरी–दिसम्बर 1874),* कलकत्ता, 1875, पृष्ठ 226

[21] आई. एच. सिद्दीकी, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 1

शाह विलायत या पीर तुर्कमान की खानकाह एवं मकबरा[22] वर्तमान नारनौल शहर के दक्षिण–पश्चिमी हिस्से पीरां का मोहल्ला (नानक पुरा) में स्थित है। यह भवन इब्राहिम शाह के मकबरे के बिल्कुल दक्षिण में स्थित है।

चित्र 2क

सरकार द्वारा इस मकबरे को संरक्षित करने के लिए मुख्य द्वार पर बाहर गेट लगवाया हुआ हैं इस मकबरे के आस – पास मुख्यतः सैनी और पंजाबी जाति के लोग रहते हैं और इस मबकरे की `देखभाल वक्फ बोर्ड द्वारा हिन्दू व्यक्ति की सहायता से की जाती हैं ।

शाह विलायत का मकबरा एक वृहत परिसर का भाग है। इस परिसर में मकबरा, मस्जिद, खानकाह, मुसाफिरखाना, आदि शामिल हैं।[23] परिसर का मुख्य प्रवेश द्वार उत्तर की तरफ से है।[24]

चित्र 2ख

[22] देखें चित्र 2क
[23] देखें चित्र 2ख
[24] देखें चित्र 2क

शाह विलायत का मकबरा इस परिसर के मध्य–पश्चिम भाग में स्थित है जिसका निर्माण तुगलक काल में हुआ था।[25] विवरण प्राप्त होता है कि मकबरे के गुम्बद व पूर्वी भाग में स्थित खंभों से युक्त भाग का निर्माण फिरोजशाह तुगलक के समय आलम खान मेवाती ने 1357 ई में कराया था।[26] परिसर के कुछ अन्य हिस्सो का भी उसने निर्माण कराया था।

चित्र 2ग

मकबरा एक वर्गाकार भवन है जिसका ब्यास बाहर से 43′× 43′ तथा अंदर से 18′×18′ है। मकबरे का प्रवेश द्वार दक्षिण की तरफ से है।[27]

चित्र 2घ

[25] जी. यज़दानी, 'नारनौल एण्ड इट्स बिल्डिंग्स', *जरनल एण्ड प्रोसिडिंग्स आफ़ द एसियाटिक सोसाइटी आफ़ बेंगाल* (न्यु सिरीज), जिल्द 3, कलकत्ता, 1907, पृष्ठ 639। देखें चित्र 2 ग

[26] वही

[27] देखें चित्र 2ग

प्रवेश द्वार की ऊंचाई 5'9" है तथा इसकी चौड़ाई 4'9" है। यहां एक चिकने पत्थर की चौखट लगी हुई है जिससे इसकी चौड़ाई 3'6" रह जाती है। मकबरे के निर्माण में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध अनगढे पत्थर व चूने का इस्तेमाल किया गया है। मकबरे के अंदर हर दीवार पर मेहराबें बनी हुई हैं[28] जिनमें प्रत्येक की चौड़ाई 11' है। इन मेहराबों में छोटे–छोटे परंतु गहरी ताखें बनी हुई हैं जिनकी चौड़ाई 4' है। आंतरिक भवन सादगी से परिपूर्ण है हालांकि दीवारों पर कुरान की आयतें एवं अन्य हल्की सजावट की गई है। इस वर्गाकार भवन के कोनों मे कोणीय–मेहराबों का प्रयोग किया गया है जो सजावट से भरपूर हैं।[29]

भवन के ऊपर बल्बाकार शैली में गुम्बद का निर्माण किया गया है।[30] अर्ध–गोलाकार आकार मे निर्मित यह गुम्बद तत्कालीन तुगलक कालीन भवन निर्माण शैली को प्रदर्शित करता है।[31] बाहर की तरफ से यह गुम्बद अष्टभुजाकार ड्रम या ग्रीवा पर आधारित है। गुम्बद के ऊपर पद्मकोश बनाया गया है जिससे यह बाहर से बहुत सुंदर दिखाई देता है। आंतरिक भाग में कक्ष के मध्य सिनेटैफ (स्मारक कक्ष) स्थित है जिसकी लम्बाई 8' 4" एवं चौड़ाई 4' 5" है।[32]

पीर तुर्कमान या शाह विलायत के मकबरे में फ़ारसी में निम्नलिखित लेख अंकित है :

> "वलियों के वली, बूढ़े तुर्क, जब वह इस दुनिया से रूखसत हुए ज्ञानी, उनकी मृत्यु के साल, 'आह ! वह संतों के लिए एक आदर्श थे.'" लेख इसकी तारीख 531 हिजरी देता है.[33]

मकबरे के अहाते में एक और उत्कीर्ण लेख है जिसका हिंदी अनुवाद इस प्रकार है:

"सभी तारीफें अल्लाह के लिए हैं, जो बड़े पवित्र हैं। कोई माबूत नहीं है परंतु अल्लाह है और मोहम्मद अल्लाह के दूत हैं।"

मकबरे के चारों तरफ 12 फीट चौड़ा दालान बना हुआ है जिसमें कंगूरा या नौ–कस्पीय मेहराब (मल्टी फोलियटिड आर्क) का प्रयोग किया गया है।[34] इनको बाद में शाहजहां के काल में या उसके बाद जोडा गया था। मकबरा दक्षिण की ओर से एक बरामदे से जुडा हुआ है जिसका व्यास उत्तर से दक्षिण 19'5" तथा पूर्व से पश्चिम 42' है। मकबरे के प्रवेश द्वार पर एक उत्कीर्ण–लेख है जिसका वर्णन इस शोध कार्य के द्वितीय अध्याय में कर दिया गया है। मकबरे के पश्चिम में एक मस्जिद है।[35] इस पर विद्यमान उत्कीर्ण–लेख के अनुसार इसका निर्माण पादशाह अकबर के शासनकाल के दौरान 1589 ई. में हुआ था

---

[28] देखें चित्र 2घ
[29] देखें चित्र 2घ
[30] देखें चित्र 2ग
[31] *हरियाणा डिस्ट्रिक्ट गजेटीयर्स महैंद्रगढ,* चंडीगढ, 1988, पृष्ठ 335
[32] देखें चित्र 2ड
[33] सुभाष परिहार, पूर्व उद्धृत, पृष्ठ 46
[34] देखें चित्र 2च
[35] देखें चित्र 2ख

तथा इसका हिंदी अनुवाद निम्नलिखित है:

"न्याय प्रिय शासक अकबर के शासनकाल में, अल्लाह की इबादत के लिए,

इस मस्जिद का निर्माण हुआ। अल्लाह खान–ए–फैज़ कि सभी दुर्घटनाओं से

रक्षा करे। मैंने कहा, ओ दिन का निर्माण करने वाले इसका इतिहास क्या है।

फरिश्ते ने उत्तर दिया– हक के फैज़ को प्राप्त कर लो– 998 हिजरी"

मस्जिद में तीन मेहराबीय प्रवेश–द्वार हैं जिन पर प्याज की शैली के तीन गुम्बदों का निर्माण किया गया है। इन गुम्बदों पर पद्मकोश का निर्माण किया गया है। मस्जिद के मेहराबीय प्रवेश–द्वारों पर बाद का कार्य स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मकबरे के सामने एक पानी का हौज बना हुआ है जो वास्तव में वुजूह व अन्य दैनिक कार्यों के लिए प्रयोग होता था।[36] हौज का निर्माण कार्य उस्ताद इमाम सालार की देखरेख में पूरा हुआ था। इस वर्गाकार हौज का व्यास 20′10″ × 20′10″ है तथा गहराई 4′ है। हौज में पानी की आपूर्ति दक्षिण–पूर्व में स्थित एक कुऐ से होती थी।

चित्र 2 छ

[36] देखें चित्र 2छ